# MAINS MATRIX

**विषय-सूची**


1. **जाति-आधारित अत्याचारों को संबोधित करने की आवश्यकता**
2. **भारत की संभावित विकास दर का आकलन**
3. **तालिबान से बातचीत — भारत को आतंकी गुटों से सावधान रहना चाहिए, भले ही वे सत्ता में हों**
4. **केंद्र के छत सौर ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करना एक चुनौती बना रहेगा: अध्ययन**


## जाति-आधारित अत्याचारों को संबोधित करने की आवश्यकता

### 1. मूल मुद्दा: जाति-आधारित अत्याचारों की निरंतरता

📍 **समस्या का विवरण:**

संवैधानिक गारंटियों और सुरक्षात्मक कानूनों के बावजूद, अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के खिलाफ जाति-आधारित भेदभाव और हिंसा पूरे भारत में जारी है।

**सांख्यिकीय साक्ष्य (एनसीआरबी 2023):**

| समुदाय | पंजीकृत मामले | 2022 की तुलना में % परिवर्तन |
|---|---|---|
| अनुसूचित जाति (एससी) | 57,789 | +0.4% |
| अनुसूचित जनजाति (एसटी) | 12,960 | +28.8% |

**अत्याचारों के रूप:**

- जातिगत मानदंडों का उल्लंघन करने पर ग्रामीण क्षेत्रों में शारीरिक हमले।
- शहरी आवास, शिक्षा और रोजगार में भेदभाव।

### 2. मूल कारण और बने रहने वाले मुद्दे

- **स्थायी जाति पदानुक्रम:** संरचनात्मक हिंसा को बनाए रखने वाली जातीय श्रेष्ठता की गहरी जड़ें।
- **सामाजिक विफलता:** मानवीय और समतावादी मूल्यों के आत्मसातीकरण

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

की कमी भारत के "सभ्य" समाज होने के दावे पर सवाल खड़े करती है।

- **अप्रभावी सुरक्षा उपाय:** अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के बावजूद, कार्यान्वयन असमान और अक्सर प्रतीकात्मक बना हुआ है।

**3. राजनीतिक संदर्भ और आलोचना**

| मुद्दा | विवरण |
|---|---|
| प्रतीकात्मक समावेशन | सार्थक नीतिगत समर्थन के बिना दलितों का धार्मिक और सांस्कृतिक समावेशन। |
| हिंदुत्व नैरेटिव | हाशिये पर पड़े लोगों के दावों को विभाजनकारी या "हिंदू-विरोधी" के रूप में प्रस्तुत करना। |
| विरोध को दबाना | प्रदर्शनकारियों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं को प्रतिबंधों और बदनामी का सामना करना पड़ता है (उदाहरण: फुले फिल्म मामला)। |
| नीति में असंगति | आरक्षण और कल्याणकारी नीतियों का एक समान रूप से पालन नहीं होना। |
| राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी | प्रभावी जातियों के अलग होने के डर से जातिगत पूर्वाग्रह के खिलाफ कोई व्यापक राष्ट्रीय अभियान नहीं चलाया गया है। |

**4. ऐतिहासिक संदर्भ और वर्ण-विरोधी आंदोलनों का ह्रास**

| चरण | विशेषताएं |
|---|---|
| 1970-1990 का दशक: | दलित पैंथर्स और बहुजन समाज पार्टी जैसे आंदोलनों ने जाति की पहचान की राजनीति को फिर से परिभाषित किया। |
| वर्तमान: | आंदोलन विखंडित, कमजोर हुए हैं और अपनी राष्ट्रीय दृश्यता खो चुके हैं। नागरिक समाज जातिगत हिंसा के प्रति कम उत्तरदायी हो गया है। |

**5. प्रणालीगत और संस्थागत विफलताएं**

- **कमजोर प्रवर्तन:**

- पुलिस और न्यायपालिका अक्सर पक्षपातपूर्ण।
- विलंबित जांच और प्रक्रियात्मक चूक।

- **दोषसिद्धि की कम दर:**
  - सबूतों के अभाव या प्रतिकूल गवाहों के कारण एससी/एसटी अधिनियम के तहत कई मामले विफल।
- **न्यायिक लंबित मामले:**
  - अदालतों में अत्याचार निवारण अधिनियम के 60% से अधिक मामले लंबित (2023 का अध्ययन)।

**6. आगे का रास्ता: एक बहुआयामी रणनीति**

| आयाम | प्रस्तावित कार्य |
|---|---|
| कानून प्रवर्तन | समय पर जांच, फास्ट-ट्रैक अदालतें, और पुलिस और न्यायपालिका के लिए जाति-संवेदनशीलता प्रशिक्षण सुनिश्चित करना। |
| राजनीतिक नेतृत्व | शिक्षा, मीडिया और सामुदायिक मंचों का उपयोग करके सामाजिक समानता के लिए एक राष्ट्रीय अभियान शुरू करना। |
| नागरिक समाज और शिक्षा जगत | धार्मिक निकायों, सांस्कृतिक मंचों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से अंतर-जातीय संवाद को बढ़ावा देना। |
| सकारात्मक कार्रवाई | पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ शिक्षा और नौकरियों के लिए आरक्षण निगरानी प्रणालियों को मजबूत करना। |
| सामाजिक आंदोलनों का पुनरुत्थान | वर्ण-विरोधी एकजुटता का पुनर्निर्माण, दलित-बहुजन नेतृत्व को बढ़ावा देना, और सामाजिक न्याय के विमर्श को पुनः प्राप्त करना। |

**7. नैतिक और संवैधानिक परिप्रेक्ष्य**

- **संवैधानिक मंडate:** अनुच्छेद 15, 17 और 46 भेदभाव के निषेध और

एससी/एसटी कल्याण की पुष्टि करते हैं।

- **नैतिक आयाम:** अंबेडकर के "स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व" के आदर्शों को कायम रखना।
- **नैतिक तर्क:** जातिगत अत्याचारों की निरंतरता भारत के नैतिक और लोकतांत्रिक ताने-बाने को कमजोर करती है।

**HOW TO USE IT**

**प्राथमिक प्रासंगिकता: जीएस पेपर I (भारतीय समाज)**

---

**1. भारतीय समाज की विशेषताएँ, भारत की विविधता:**

**कैसे उपयोग करें:**

जाति भारतीय समाज की एक परिभाषित — और अक्सर नकारात्मक — विशेषता है। जातिगत अत्याचारों के आँकड़े इस विविधता के अंधेरे पक्ष को दिखाते हैं, जहाँ पदानुक्रम और भेदभाव अब भी बने हुए हैं।

**मुख्य बिंदु:**

- **NCRB 2023 डेटा** (एससी पर 57,789 मामले, एसटी पर 28.8% की वृद्धि) का उपयोग करें यह दिखाने के लिए कि आधुनिकीकरण के बावजूद जाति पहचान अब भी संघर्ष और हिंसा का मुख्य स्रोत है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में शारीरिक हिंसा से लेकर शहरी क्षेत्रों में मकान और रोजगार में सूक्ष्म भेदभाव तक — जाति की निरंतरता दिखाएँ।

---

**2. महिलाओं और महिला संगठनों की भूमिका:**

**कैसे उपयोग करें:**

दलित और आदिवासी महिलाएँ **"दोहरी भेदभाव" (जाति + लिंग)** की शिकार होती हैं, जिससे वे हिंसा और शोषण के लिए असमान रूप से संवेदनशील रहती हैं। यह बिंदु महिलाओं की सुरक्षा संबंधी प्रश्नों में बहुत प्रभावी रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

---

**3. सामाजिक सशक्तिकरण:**

**कैसे उपयोग करें:**

लेख में सामाजिक सशक्तिकरण के उपकरणों (कानून, आंदोलन, नीतियाँ) और उनकी सीमाओं का प्रत्यक्ष विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य बिंदु:**

- **दलित पैंथर्स, बहुजन समाज पार्टी (BSP)** जैसे आंदोलनों के पतन ने हाशिए पर पड़े समूहों की सामाजिक-राजनीतिक एजेंसी को कमजोर किया है।

- सामाजिक सशक्तिकरण के लिए **नए सामाजिक आंदोलनों के पुनरुत्थान** की आवश्यकता पर बल दें।

---

**प्राथमिक प्रासंगिकता: जीएस पेपर II (शासन, संविधान, सामाजिक न्याय)**

---

**1. भारतीय संविधान – ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विशेषताएँ:**

**कैसे उपयोग करें:**
अत्याचारों की निरंतरता यह दिखाती है कि संविधान के आदर्शों को ज़मीन पर उतारना कितना कठिन है।

**मुख्य बिंदु:**

- **मौलिक अधिकार:** अनुच्छेद 15 (भेदभाव का निषेध), अनुच्छेद 17 (अस्पृश्यता का उन्मूलन)।
- **राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत:** अनुच्छेद 46 (अनुसूचित जाति/जनजाति के शैक्षणिक व आर्थिक हितों का संवर्धन)।
- **प्रस्तावना:** न्याय, स्वतंत्रता, समानता के आदर्शों से जोड़ें।

---

**2. शासन, पारदर्शिता और जवाबदेही:**

**कैसे उपयोग करें:**
संस्थागत विफलताओं पर लेख का विश्लेषण शासन की असली चुनौतियों को उजागर करता है।

**मुख्य बिंदु:**

- **कानून प्रवर्तन की विफलता:** पुलिस की पक्षपातपूर्ण जांच, देरी और कम दोषसिद्धि दरें — SC/ST अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989 के प्रभावी क्रियान्वयन की कमी।
- **न्यायिक विलंब:** अत्याचार अधिनियम के 60% से अधिक मामले लंबित — न्यायिक प्रणाली की गंभीर कमजोरी का संकेत।
- **राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी:** प्रभुत्वशाली जातियों को नाराज़ करने के डर से राष्ट्रीय स्तर पर जाति-विरोधी अभियान न चलाना — यह राजनीतिक अर्थशास्त्र का तीखा अवलोकन है।

---

**3. कमजोर वर्गों के लिए कल्याण योजनाएँ:**

**कैसे उपयोग करें:**
सिर्फ योजनाएँ गिनाने के बजाय, उनकी **प्रभावशीलता की आलोचना** करें।

**मुख्य बिंदु:**

- तर्क दें कि **सामाजिक पूर्वाग्रह समाप्त किए बिना** कोई भी कल्याण योजना टिकाऊ नहीं हो सकती।
- "**प्रतीकात्मक समावेशन**" बनाम "**नीतिगत समर्थन की वास्तविक कमी**" — यह विरोधाभास बहुत प्रभावी वाक्यांश है।

---

**द्वितीयक प्रासंगिकता: जीएस पेपर III (आंतरिक सुरक्षा) और जीएस पेपर IV (नीतिशास्त्र)**

---

**1. जीएस पेपर III – विकास और उग्रवाद के बीच संबंध:**

**कैसे उपयोग करें:**
सामाजिक अन्याय और अनुसूचित जनजातियों पर बढ़ते अत्याचार (28.8% वृद्धि) मध्य भारत के उग्रवाद (LWE) के मूल कारणों में से एक हैं। यह आँकड़ा उत्तर में विश्लेषणात्मक गहराई जोड़ता है।

---

**2. जीएस पेपर IV – नीतिशास्त्र और मानव इंटरफेस:**

**कैसे उपयोग करें:**
पूरा विषय **नैतिकता और मानवीय मूल्यों** से जुड़ा है।

**मुख्य बिंदु:**

- **अंबेडकर के सिद्धांत:** "स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व" — ये नैतिक दिशासूचक हैं जिनका उल्लंघन हो रहा है।
- **नैतिक बनाम सभ्य समाज:** मानवीय मूल्यों की कमी भारत के "सभ्य समाज" होने के दावे पर प्रश्नचिह्न लगाती है।
- **निष्पक्षता बनाम वस्तुनिष्ठता:** एक सिविल सेवक को कानून का पालन करते हुए (वस्तुनिष्ठ) अपने व्यक्तिगत जातिगत पूर्वाग्रहों से मुक्त (निष्पक्ष) रहकर ऐसे मामलों का निपटान करना चाहिए।

## भारत की संभावित विकास दर का अनुमान

**1. मूल विषय:**

यह लेख भारत की **संभावित जीडीपी वृद्धि दर (Potential GDP Growth Rate)** का विश्लेषण करता है — विशेष रूप से हाल के **सकल मूल्य वर्धन (GVA)**, **सकल पूंजी निर्माण (GCF)** और **इंक्रिमेंटल कैपिटल आउटपुट रेशियो (ICOR)** के रुझानों के संदर्भ में।

लेख यह आकलन करता है कि **2025–26 के लिए अनुमानित 7.8% की वृद्धि दर** क्या वास्तव में भारत की संभावित वृद्धि दर

(लगभग **6.5%**) के अनुरूप है या उससे अधिक है।

---

### 2. 📊 हालिया GDP और GVA रुझान

| अवधि | वास्तविक GDP औसत वृद्धि | टिप्पणियाँ |
|---|---|---|
| 2022–23 से 2024–25 | 9.4% | कोविड के बाद की उच्च वृद्धि |
| 2025–26 (पहली तिमाही) | 7.8% | पिछले वर्षों के औसत से कम |
| वार्षिक GDP वृद्धि (2022–23 से 2024–25) | 7.6%, 9.2%, 6.5% | वर्ष-दर-वर्ष डेटा |
| 2025–26 (Q1) GVA वृद्धि | 7.6% | पिछले तीन वर्षों के औसत (9.5%) से कम |

**क्षेत्रवार रुझान:**

- वृद्धि मुख्यतः **मैन्युफैक्चरिंग, ट्रांसपोर्ट और कंस्ट्रक्शन** से प्रेरित रही।
- मैन्युफैक्चरिंग GVA (Q1 FY 2025–26): **7.7%** (पिछले तीन वर्षों का औसत: **5.8%**)।

---

### 3. 📈 प्रमुख आर्थिक अवधारणाएँ

**संभावित विकास दर (Potential Growth Rate):**
वह अधिकतम दर जिस पर अर्थव्यवस्था **बिना मुद्रास्फीति बढ़ाए** दीर्घकालिक रूप से बढ़ सकती है।
→ भारत के लिए वर्तमान में लगभग **6.5%** अनुमानित।

**ICOR (Incremental Capital Output Ratio):**
यह मापता है कि **एक अतिरिक्त उत्पादन इकाई** प्राप्त करने के लिए कितनी पूंजी निवेश की आवश्यकता है।
→ कम ICOR = अधिक पूंजी दक्षता।
→ यह **GCF (सकल पूंजी निर्माण)** और **वास्तविक GDP वृद्धि** के अनुपात से निकाला जाता है।

---

### 4. अनुभवजन्य संकेतक (Empirical Indicators)

| संकेतक | FY 2022–23 | FY 2023–24 | FY 2024–25 | FY 2025–26 (Q1) |
|---|---|---|---|---|
| वास्तविक GCF/GDP अनुपात | 33.8% | 35.3% | 33.3% | — |
| औसत GCF दर | 33.6% | 34.4% | — | — |

| संकेतक | FY 2022–23 | FY 2023–24 | FY 2024–25 | FY 2025–26 (Q1) |
|---|---|---|---|---|
| अनुमानित ICOR | ~5.2 | — | — | — |

**औसत GCF 33.6% और ICOR 5.2 के साथ**, संभावित GDP वृद्धि ≈ **6.5%**।

यदि भारत को 6.5% से अधिक वृद्धि चाहिए, तो या तो **GCF बढ़ाना होगा** या **ICOR घटाना होगा** (अर्थात पूंजी उपयोग की दक्षता बढ़ानी होगी)।

---

### 5. सार्वजनिक निवेश और ICOR दक्षता

**ICOR** पूंजी के **प्रभावी उपयोग** का संकेतक है। कोविड के बाद **सार्वजनिक निवेश** ने विकास को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**केंद्र के पूंजीगत व्यय की वृद्धि दर:**

- 2021–22 → **39.4%**
- 2022–23 → **24.4%**
- 2023–24 → **28.9%**
- 2024–25 → **10.8% (अनुमानित)**

**निहितार्थ:**

यदि भारत को 6.5% से अधिक की वृद्धि प्राप्त करनी है, तो:

- GCF अनुपात में लगभग **2 प्रतिशत अंक की वृद्धि** करनी होगी (34% → 36%)।
- **निजी क्षेत्र निवेश का हिस्सा** बढ़ाना होगा (जो 37% → 34% तक घटा है)।
- **ICOR घटाने** के लिए **तकनीकी नवाचार** और **संरचनात्मक सुधार** आवश्यक हैं।

---

### 6. विकास की संभावनाएँ

**सकारात्मक कारक:**

- प्रौद्योगिकी नवाचार (AI, Automation)
- पूंजी दक्षता में सुधार
- बुनियादी ढाँचा निवेश में निरंतरता

**चुनौतियाँ:**

- निजी निवेश में गिरावट
- सरकारी पूंजी व्यय में कमी
- जनसंख्या का वृद्धावस्था की ओर झुकाव
- उपभोग पैटर्न का सेवाक्षेत्र की ओर झुकाव

**दीर्घकालिक परिदृश्य:**

- वैश्विक व्यापार परिदृश्य अनिश्चित।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- टैरिफ नीतियाँ और सप्लाई चेन विविधीकरण निर्यात पर असर डाल सकते हैं।
- भारत को **उत्पादकता बढ़ाने, निजी निवेश सशक्त करने, और व्यापार विविधीकरण** पर ध्यान देना होगा।

---

**7. नीति निहितार्थ / आगे का रास्ता**

| प्राथमिक क्षेत्र | अनुशंसित कदम |
|---|---|
| **निवेश** | सार्वजनिक और निजी दोनों पूंजी निर्माण को बढ़ावा देना। |
| **दक्षता** | तकनीकी नवाचार और बेहतर परियोजना प्रबंधन के माध्यम से ICOR कम करना। |
| **राजकोषीय नीति** | सरकारी पूंजीगत व्यय को उच्च लेकिन स्थायी स्तर पर बनाए रखना। |
| **संरचनात्मक सुधार** | FDI और घरेलू निवेश आकर्षित करने हेतु नियमों को सरल बनाना। |
| **व्यापार नीति** | निर्यात बाजारों का विविधीकरण, टैरिफ में कमी, और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना। |

**HOW TO USE**

**प्राथमिक प्रासंगिकता: जीएस पेपर III (भारतीय अर्थव्यवस्था)**

**1. भारतीय अर्थव्यवस्था और योजना, संसाधनों का संचलन, विकास, और रोजगार से संबंधित मुद्दे:**

- **कैसे उपयोग करें:** यह केंद्रीय अनुप्रयोग है। संपूर्ण लेख भारत की विकास गाथा, उसके चालकों और भविष्य की चुनौतियों पर प्रश्नों के उत्तर देने के लिए रूपरेखा प्रदान करता है।
- **मुख्य बिंदु:**
  - **विकास के चालकों को समझना:** डेटा का उपयोग यह समझाने के लिए करें कि उच्च पोस्ट-COVID विकास (9.4% औसत) सार्वजनिक क्षेत्र की पूंजीगत व्यय (केपेक्स) में वृद्धि से प्रेरित था। हाल की मंदी इस केपेक्स विकास के कम होने (28.9% से 10.8%) के साथ संरेखित है।
  - **संभावित विकास की अवधारणा:** इसे लेख के अनुसार परिभाषित करें: "मुद्रास्फीतिकारी दबावों के बिना टिकाऊ सबसे उच्च विकास दर।" अनुमानित

6.5% संभावित विकास का हवाला देकर सरकारी लक्ष्यों (जैसे 7.8%) का मूल्यांकन करने के लिए एक बेंचमार्क प्रदान करता है।

- **आईसीओआर (ICOR) की महत्वपूर्ण भूमिका:** यह एक उच्च-मूल्य वाली अवधारणा है।
  - **परिभाषा:** आईसीओआर (वृद्धिशील पूंजी उत्पादन अनुपात) = निवेश (सकल पूंजी निर्माण - जीसीएफ) / सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) विकास।
  - **व्याख्या:** एक उच्च आईसीओआर (~5.2) पूंजी के अकुशल उपयोग का संकेत देता है—विकास की एक इकाई उत्पन्न करने के लिए अधिक निवेश की आवश्यकता होती है। एक कम आईसीओआर उच्च उत्पादकता को दर्शाता है।
  - **तर्क:** 6.5% से ऊपर विकास प्राप्त करने के लिए, भारत को या तो जीसीएफ/जीडीपी अनुपात बढ़ाना होगा या, जो अधिक महत्वपूर्ण है, दक्षता में सुधार करके आईसीओआर को कम करना होगा।

**2. निवेश मॉडल:**

- **कैसे उपयोग करें:** डेटा सार्वजनिक और निजी निवेश के बीच संतुलन में बदलाव को पूरी तरह से दर्शाता है।
- **मुख्य बिंदु:**
  - **एक उत्प्रेरक के रूप में सार्वजनिक निवेश:** COVID के बाद की वसूली में इसकी भूमिका को स्वीकार करें।
  - **निजी निवेश की आवश्यकता:** निजी निवेश के कुल सकल पूंजी निर्माण (जीसीएफ) का 37% से गिरकर 34% होने की चिंताजनक प्रवृत्ति पर प्रकाश डालें। तर्क दें कि टिकाऊ उच्च विकास के लिए, निजी निवेश का पुनरुत्थान अनिवार्य है। यह

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

सिर्फ "अधिक निवेश" की मांग करने की तुलना में गहरी समझ दर्शाता है।

**द्वितीयक प्रासंगिकता: जीएस पेपर I (समाज) और जीएस पेपर II (शासन)**

**1. जीएस I: वैश्वीकरण और भारतीय समाज:**

- **कैसे उपयोग करें:** आर्थिक विकास को व्यापक सामाजिक परिवर्तनों से जोड़ें।
- **मुख्य बिंदु:**
    - "सेवाओं की ओर खपत में बदलाव" और "जनसांख्यिकीय संक्रमण" सीधे आर्थिक परिणामों वाली सामाजिक प्रवृत्तियां हैं। इसका उपयोग भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज के विकास पर चर्चा करने के लिए किया जा सकता है।

**2. जीएस II: सरकारी नीतियां और हस्तक्षेप:**

- **कैसे उपयोग करें:** "आगे का रास्ता" खंड नीतिगत नुस्खों की एक तैयार सूची है।
- **मुख्य बिंदु:**
    - सिफारिशें—निवेश को बढ़ावा देना, दक्षता में सुधार, संरचनात्मक सुधार, और एक रणनीतिक व्यापार नीति—इस सवाल का जवाब देने के लिए इस्तेमाल की जा सकती हैं कि विकास को गति देने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए।

## तालिबान से संवाद — सत्ता में होने पर भी आतंकवादी समूहों से सावधान रहे भारत

**लेखकीय दृष्टिकोण:** संपादकीय परिप्रेक्ष्य — व्यावहारिक कूटनीति के साथ रणनीतिक सतर्कता पर बल

---

**1. घटना / संदर्भ**

**घटना:** अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री **अमीर खान मुत्ताकी** की भारत यात्रा।

**महत्व:** 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद **भारत की यह पहली आधिकारिक उच्चस्तरीय वार्ता**।

**सुविधा:** यह यात्रा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) की छूट के तहत संभव हुई, क्योंकि मुत्ताकी 2001 से प्रतिबंध सूची में हैं।

**मुख्य बैठकें:** विदेश मंत्री **एस. जयशंकर** और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार **अजीत डोभाल** से बातचीत।

---

**2. भारत की रणनीतिक भागीदारी का तर्क**

| आयाम | व्याख्या |
|---|---|
| **सुरक्षा हित** | अफगानिस्तान से उत्पन्न आतंकवादी खतरों को निष्क्रिय करना, भारत द्वारा बनाए गए परियोजनाओं और कर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना। |
| **क्षेत्रीय भू-राजनीति** | पाकिस्तान–तालिबान मतभेदों का उपयोग करना — "दुश्मन का दुश्मन" वाला तर्क। |
| **यथार्थवादी दृष्टिकोण (Realpolitik)** | तालिबान देश के अधिकांश हिस्सों पर नियंत्रण रखता है; रूस, चीन, ईरान जैसे क्षेत्रीय देश पहले से संवाद में हैं। |
| **संप्रभुता का सिद्धांत** | संयुक्त बयान में "संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के परस्पर सम्मान" पर बल — परोक्ष रूप से पाकिस्तान के हस्तक्षेप को अस्वीकार किया गया। |

---

### 3. प्रमुख परिणाम और समझौते

**राजनयिक उन्नयन:**

भारत ने काबुल स्थित **तकनीकी मिशन** को एक **औपचारिक दूतावास** के रूप में उन्नत करने की घोषणा की — यह सीमित मान्यता (calibrated recognition) की दिशा में कदम है।

**सुरक्षा आश्वासन:**

तालिबान ने आश्वासन दिया कि **अफगान भूमि का उपयोग भारत-विरोधी गतिविधियों के लिए नहीं होगा** — यह 2001–2021 की स्थिति से बड़ा परिवर्तन है।

**विकास सहयोग:**

भारत ने **स्वास्थ्य क्षेत्र (अस्पताल)**, **मानवीय सहायता**, और **व्यापारिक ढाँचे (ट्रेड इंफ्रास्ट्रक्चर)** में नई पहलें घोषित कीं।

---

### 4. विवाद और कूटनीतिक त्रुटियाँ

| मुद्दा | विवरण |
|---|---|
| **प्रतीकात्मक भ्रम** | काबुल में दूतावास पर पुराने अफगान गणराज्य का झंडा फहराने की कोशिश से कूटनीतिक असहजता उत्पन्न हुई। |
| **लैंगिक बहिष्कार** | आरंभिक संवाद में महिला पत्रकारों की अनुपस्थिति पर |

| मुद्दा | विवरण |
|---|---|
| | आलोचना हुई; विरोध के बाद ही उन्हें शामिल किया गया। |
| **मानवाधिकार पर चुप्पी** | भारत ने तालिबान के महिलाओं, अल्पसंख्यकों और राजनीतिक समावेशन के रिकॉर्ड पर सार्वजनिक टिप्पणी नहीं की — इससे नैतिक स्थिति कमजोर पड़ी। |

---

**5. व्यापक प्रभाव**

**क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य:**

- भारत की सहभागिता से दक्षिण एशिया की भू-राजनीति में नया आयाम जुड़ा।
- यह **पाकिस्तान की एकाधिकारवादी स्थिति** और **अफगानिस्तान में चीन के प्रभाव** दोनों को संतुलित करता है।
- इससे भारत की **मध्य एशिया और यूरेशियाई सुरक्षा विमर्शों में प्रासंगिकता** बढ़ेगी।

**सुरक्षा जोखिम:**

- तालिबान के **आतंकी नेटवर्कों (LeT, JeM, ISKP)** से संबंध अब भी चिंता का विषय हैं।
- सीमा-पार आतंकवाद और आतंकियों की घुसपैठ का खतरा बना हुआ है।

---

**6. लेखक का मूल्यांकन / संपादकीय दृष्टिकोण**

**मुख्य तर्क:**

तालिबान से संवाद आवश्यक है, परंतु जोखिमपूर्ण भी — भारत को **राजनीतिक आवश्यकता को नैतिक स्वीकृति से भ्रमित नहीं करना चाहिए**।

**चेतावनी:**

- "तालिबान से संवाद" कहीं **आतंक आधारित शासन की वैधता प्रदान करने का माध्यम** न बन जाए।
- भारत को मानवीय सहयोग के साथ-साथ **रणनीतिक सावधानी** बनाए रखनी होगी।

**अनुशंसित रुख:**

**"Engage, but verify" — संवाद करो, पर सतर्क रहो।**

सुरक्षा के लिए बातचीत बनाए रखो, किंतु भारत के **मूल्य, सिद्धांत और विश्वसनीयता** को भी अक्षुण्ण रखो

**HOW TO USE IT**

**प्राथमिक प्रासंगिकता: जीएस पेपर II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध)**

**1. भारत और उसके पड़ोसी देश- संबंध:**

- **कैसे उपयोग करें:** यह सबसे सीधा और प्रासंगिक क्षेत्र है। अफगानिस्तान एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है और तालिबान जैसे गैर-राज्य अभिनेता द्वारा कब्जे के बाद की जटिल परिस्थितियों में भारत की नीति एक आदर्श केस स्टडी है।
- **मुख्य बिंदु:**
    - **नीतिगत बदलाव:** भारत की पूर्व स्थिति (लोकतांत्रिक अफगान गणराज्य का समर्थन और एक प्रमुख विकास भागीदार होना) की तुलना तालिबान के साथ उसके वर्तमान व्यावहारिक जुड़ाव से करें। यह एक अनुकूलनीय विदेश नीति को दर्शाता है।
    - **"दुश्मन का दुश्मन" तर्क:** पाकिस्तान और तालिबान के बीच बढ़ती दूरी को एक प्रमुख रणनीतिक आधार के रूप में प्रस्तुत करें। तालिबान के साथ जुड़ाव से भारत को अफगानिस्तान में पाकिस्तान की कथित "रणनीतिक गहराई" को तोड़ने और उसके प्रभाव का मुकाबला करने में मदद मिलती है।
    - **चीन का मुकाबला:** इस बात का उल्लेख करें कि अन्य क्षेत्रीय शक्तियां (रूस, चीन, ईरान) पहले से ही तालिबान से जुड़ रही हैं, जिससे भारत के लिए अपने हितों की रक्षा करने और चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए मेज पर मौजूद होना अनिवार्य हो गया है।

**2. विकसित और विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का भारत के हितों पर प्रभाव:**

- **कैसे उपयोग करें:** तालिबान की नीतियां सीधे तौर पर भारत की सुरक्षा और आर्थिक हितों को प्रभावित करती हैं।
- **मुख्य बिंदु:**
    - **सुरक्षा अनिवार्यता:** प्राथमिक प्रेरक शक्ति यह आश्वासन प्राप्त करना है कि अफगान भूमि का उपयोग भारत-विरोधी आतंकी गुटों (जैसे लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद) द्वारा नहीं किया जाएगा। यह एक सीधा राष्ट्रीय सुरक्षा चिंता का विषय है।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **निवेशों की सुरक्षा:** भारत ने अफगान बुनियादी ढांचे (जैसे सलमा बांध, संसद भवन) में अरबों रुपये का निवेश किया है। इन परिसंपत्तियों की सुरक्षा और भविष्य के व्यापार अवसरों, जिसमें मध्य एशिया तक पहुंच शामिल है, का पता लगाने के लिए तालिबान के साथ जुड़ाव आवश्यक है।

**द्वितीयक प्रासंगिकता: जीएस पेपर III (आंतरिक सुरक्षा) और जीएस पेपर IV (नीतिशास्त्र)**

**1. जीएस III: विकास और उग्रवाद के प्रसार के बीच संबंध; सुरक्षा चुनौतियाँ:**

- **कैसे उपयोग करें:** अफगानिस्तान की स्थिति भारत के लिए संभावित आंतरिक सुरक्षा खतरों का एक सीधा स्रोत है।
- **मुख्य बिंदु:**
  - **आतंकवाद का फैलाव:** इस्लामिक स्टेट खोरासन प्रांत (ISKP) जैसे आतंकी गुटों की मौजूदगी और पाकिस्तान-आधारित प्रॉक्सी समूहों के साथ तालिबान के संबंधों से भारत में उग्रवाद और आतंकी साजिशों के बढ़ने का खतरा बना हुआ है।
  - **प्रॉक्सी वार:** तालिबान के शासन वाला अफगानिस्तान जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान-प्रायोजित प्रॉक्सी युद्ध को फिर से भड़का सकता है। भारत का जुड़ाव इस जोखिम को कम करने के लिए एक सुरक्षात्मक उपाय है।

**2. जीएस IV: शासन में नैतिकता, सत्यनिष्ठा और अभिवृत्ति:**

- **कैसे उपयोग करें:** यह मामला राष्ट्रीय हित और नैतिक विदेश नीति के बीच एक क्लासिक दुविधा प्रस्तुत करता है।
- **मुख्य बिंदु:**
  - **दुविधा:** क्या भारत को एक ऐसी सरकार के साथ जुड़ना चाहिए जो व्यवस्थित रूप से महिलाओं के अधिकारों, अल्पसंख्यक अधिकारों (जैसे, हजारा समुदाय) और लोकतांत्रिक सिद्धांतों का उल्लंघन करती है?
  - **यथार्थवाद बनाम नैतिक स्थिति:** लेख ने इस दौरान मानवाधिकारों पर भारत की

चुप्पी की आलोचना की है, जिससे उसकी नैतिक स्थिति कमजोर होती है। एक उत्तर इस पर बहस कर सकता है: क्या सुरक्षा के लिए व्यावहारिक जुड़ाव आवश्यक है, या यह मूल मूल्यों से समझौता है?

- **एक संतुलित दृष्टिकोण:** लेखक द्वारा सुझाया गया "जुड़ाव, लेकिन सत्यापन" का रुख एक व्यावहारिक नैतिक स्थिति है। यह भारत को अपने हितों का पीछा करने की अनुमति देता है, साथ ही तालिबान पर राजनयिक चैनलों के माध्यम से दबाव बनाए रखता है।

## केंद्र के छत सौर ऊर्जा लक्ष्यों की प्राप्ति चुनौती बनी रहेगी: अध्ययन

**लेखक:** Jacob Koshy

**स्रोत:** The Hindu

**तिथि:** अक्टूबर 2025

---

### 1. संदर्भ और पृष्ठभूमि

**योजना:** पीएम सूर्य घर योजना (PMSGY)

**लक्ष्य:** जुलाई 2025 तक 1 करोड़ छत सौर ऊर्जा इंस्टॉलेशन।

**उद्देश्य:**

- नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा देना।
- घरेलू विद्युत खपत में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना।

---

### 2. अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

**अध्ययन द्वारा किया गया:**

- Institute for Energy Economics and Financial Analysis (IEEFA)
- JMK Research and Analytics

**मुख्य निष्कर्ष:**

मार्च 2024 – जुलाई 2025 के बीच आवेदन में चार गुना वृद्धि के बावजूद, केवल 13.1% लक्ष्य ही पूरा हुआ।

**जुलाई 2025 तक प्रगति की स्थिति:**

- **इंस्टॉल की गई क्षमता:** राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 4,946 मेगावॉट।
- **लक्ष्य पूरा:** इंस्टॉलेशन का 13.1%; सब्सिडी का 14.1% जारी।
- **कुल सब्सिडी जारी:** ₹9,281 करोड़, 16 लाख से अधिक परिवारों को लाभ।

---

### 3. पहचानी गई चुनौतियाँ

| चुनौती | विवरण |
|---|---|
| मीटरिंग में देरी | मीटरिंग प्रक्रिया में समय लगता है (45–120 दिन)। |
| समन्वय की कमी | उपभोक्ता, इंस्टॉलर, DISCOM और राज्य एजेंसियों के बीच खराब समन्वय। |
| उपयोगिता में अक्षमता | वितरण कंपनी (DISCOM) स्तर पर प्रक्रियात्मक अक्षमताएँ। |
| वित्तीय बाधाएँ | सरकार द्वारा लोन के माध्यम से अग्रिम पूंजी प्रदान करने में धीमी प्रक्रिया। |

---

**4. प्रदर्शन अवलोकन**

| संकेतक | डेटा / निष्कर्ष |
|---|---|
| आवेदन (जुलाई 2025 तक) | घरेलू श्रेणी में 57.9 लाख आवेदन। |
| इंस्टॉलेशन पूर्ण | 4.9 GW क्षमता स्थापित। |
| योगदान | भारत की कुल घरेलू छत क्षमता का 44.5%। |
| औसत इंस्टॉलेशन लागत | DCR-अनुरूप मॉड्यूल पर लगभग ₹12/वॉट। |

---

**5. मुख्य टिप्पणियाँ / उद्धरण**

**DCR-अनुरूप मॉड्यूल:**
PMSGY के तहत छत सौर इंस्टॉलेशन पूरी तरह भारत में निर्मित मॉड्यूल का उपयोग करते हैं, जो घरेलू निर्माण को समर्थन देता है।

**विशेषज्ञ अवलोकन:**

"स्थानीय स्तर पर मजबूत ऑन-ग्राउंड निष्पादन क्षमता लक्ष्य स्थापित करना आवश्यक है ताकि छत सौर ऊर्जा का विस्तार हो सके।"
— विभूति गर्ग, निदेशक, IEEFA-साउथ एशिया

---

**6. व्यापक निहितार्थ**

- **नीति संबंधी चिंता:** धीमी प्रगति 2025 तक 1 करोड़ इंस्टॉलेशन लक्ष्य को खतरे में डाल सकती है।
- **आर्थिक प्रभाव:** छत सौर ऊर्जा अपनाने में देरी भारत के नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण और कार्बन न्यूट्रैलिटी लक्ष्यों को धीमा कर सकती है।
- **शासन संबंधी सीख:** यह वितरण कंपनियों और लाभार्थियों के बीच विकेंद्रीकरण, प्रभावी निधि वितरण और बेहतर समन्वय की आवश्यकता को उजागर करता है।

**TO JOIN OUR AFFORDABLE ASNWER WRITING PLANS IN HINDI**

VISIT – WWW.MENTORAIAS.CO.IN